Worksheet 10 Subject: - Hindi कक्षा - आठ Teacher: - Mrs. Meera

Name: _____ Class & Sec: _____ Roll No. _____ Date: 05.05.2020

2

असली याचक

उद्देश्य

- संवेदनशीलता, प्रेम, वात्सल्य के साथ ही धनाढ्य वर्ग के चेहरे से कृत्रिमता का नकाब हटाकर उनके वास्तविक स्वरूप का भान कराना।
- धन-लोलुपता से ऊपर उठकर दूसरों की मदद करने की भावना विकसित करना।
- स्वार्थ और परार्थ के बीच अंतर जानना।

(1)

अंधी प्रतिदिन मंदिर के दरवाजे पर जाकर खड़ी होती, दर्शन करनेवाले बाहर निकलते तो वह अपना हाथ फैला देती और नम्रता से कहती, ''बाबू जी, अंधी पर दया हो जाए।''

वह जानती थी कि मंदिर में आनेवाले सहृदय और दयालु हुआ करते हैं। उसका यह अनुमान असत्य न था। आने-जानेवाले दो-चार पैसे उसके हाथ पर रख ही देते थे। अंधी उनको दुआएँ देती और उनकी सहृदयता को सराहती। स्त्रियाँ भी उसके पल्ले में थोड़ा-बहुत अनाज डाल जाया करती थीं। सुबह से शाम तक वह इसी प्रकार हाथ फैलाए खड़ी रहती। उसके पश्चात मन-ही-मन भगवान को प्रणाम करती और अपनी लाठी के सहारे झोंपड़ी की राह पकड़ती। उसकी झोंपड़ी नगर से बाहर थी। रास्ते में भी याचना करती जाती किंतु राहगीरों में अधिक संख्या श्वेत वस्त्रवालों की होती, जो पैसे देने की अपेक्षा झिड़कियाँ दिया करते। तब भी अंधी निराश न होती और उसकी याचना बराबर जारी रहती। झोंपड़ी तक पहुँचते-पहुँचते उसे दो-चार पैसे और मिल जाते।

झोंपड़ी के समीप पहुँचते ही एक दस वर्ष का लड़का उछलता-कूदता आता और उससे चिपट जाता। अंधी टटोलकर उसके माथे को चूमती। बच्चा कौन है? किसका है? कहाँ से आया? इस बात से कोई परिचित नहीं था। पाँच वर्ष हुए पास-पड़ोसवालों ने उसे अकेला देखा था। इन्हीं दिनों एक दिन संध्या-समय लोगों ने उसकी गोद में एक बच्चा देखा, वह रो रहा था, अंधी उसका मुख चूम-चूमकर उसे चुप कराने का प्रयत्न कर रही थी। वह कोई असाधारण घटना न थी, अतः किसी ने भी न पूछा कि बच्चा किसका है। उसी दिन से यह बच्चा अंधी के पास था और प्रसन्न था। वह उसको अपने से अच्छा खिलाती और पहनाती।

अंधी ने अपनी झोंपड़ी में एक हाँडी गाड़ रखी थी। संध्या-समय जो कुछ माँगकर लाती उसमें डाल देती और उसे किसी वस्तु से ढाँप देती। इसलिए कि दूसरे व्यक्तियों की दृष्टि उस पर न पड़े। खाने के लिए अन्न काफ़ी मिल जाता था। उससे काम चलाती। पहले बच्चे को पेट भरकर खिलाती, फिर स्वयं खाती।

(2)

काशी में सेठ बनारसीदास बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति थे। वे बहुत बड़े देशभक्त और धर्मात्मा थे। दिन के बारह बजे तक सेठ स्नान-ध्यान में संलग्न रहते। कोठी पर हर समय भीड़ लगी रहती। कर्ज के इच्छुक तो आते ही थे, परंतु ऐसे व्यक्तियों का भी ताँता बँधा रहता जो अपनी पूँजी सेठ जी के पास धरोहर रूप में रखने आते थे। सैकड़ों भिखारी अपनी जमा-पूँजी इन्हीं सेठ जी के पास जमा कर जाते। अंधी को भी यह बात ज्ञात थी।

उसकी हाँडी लगभग पूरी भर गई थी। उसको शंका थी कि कोई चुरा न ले। एक दिन संध्या-समय अंधी ने वह हाँडी उखाड़ी और अपने फटे हुए आँचल में छिपाकर सेठ जी की कोठी पर पहुँची।

© Madhuban Educational Books

सेठ जी बही-खाते के पृष्ठ उलट रहे थे, उन्होंने पूछा, ''क्या है बुढ़िया?''

अंधी ने हाँडी उनके आगे सरका दी और डरते-डरते कहा, ''सेठ जी, इसे अपने पास जमा कर लो, मैं अंधी, अपाहिज कहाँ रखती फिरूँगी?''

सेठ जी ने हाँडी की ओर देखकर कहा, ''इसमें क्या है?'' अंधी ने उत्तर दिया, ''भीख माँग-माँगकर अपने बच्चे के लिए दो-चार पैसे इकट्ठे किए हैं, अपने पास रखते डरती हूँ, कृपया इन्हें आप अपनी कोठी में रख लो।''

सेठ जी ने मुनीम की ओर संकेत करते हुए कहा, ''बही में जमा कर लो।'' मुनीम जी ने नकदी गिनकर उसके नाम से जमा कर ली। अंधी सेठ जी को आशीर्वाद देती हुई अपनी झोंपड़ी में चली गई।

(3)

दो वर्ष बहुत सुख के साथ बीते। इसके पश्चात एक दिन लड़के को ज्वर चढ़ गया। अंधी ने दवा-दारू की, झाड़-फूँक से भी काम लिया, टोने-टोटके की परीक्षा की, परंतु संपूर्ण प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुए। लड़के की दशा दिन-प्रतिदिन बुरी होती गई, अंधी निराश हो गई। परंतु फिर ध्यान आया कि संभवतः डॉक्टर के इलाज से फ़ायदा हो जाए। इस विचार के आते ही वह गिरती-पड़ती सेठ जी की कोठी पर आ पहुँची। सेठ जी उपस्थित थे।

अंधी ने कहा, ''सेठ जी मेरी जमा-पूँजी में से दस-पाँच रुपये मुझे मिल जाएँ, तो बड़ी कृपा हो। मेरा बच्चा मर रहा है, डॉक्टर को दिखाऊँगी।''

सेठ जी ने कठोर स्वर में कहा, ''कैसी जमा-पूँजी? कैसे रुपये? मेरे पास किसी के रुपये जमा नहीं हैं।''

अंधी ने रोते हुए उत्तर दिया, ''दो वर्ष हुए, मैं आपके पास धरोहर रख गई थी। दे दीजिए, बड़ी दया होगी।''

सेठ जी ने मुनीम की ओर रहस्यमयी दृष्टि से देखते हुए कहा, ''मुनीम जी, ज़रा देखना तो, इसके नाम की कोई पूँजी जमा है क्या?''

मुनीम ने सेठ जी का संकेत समझ लिया था, बही के पृष्ठ उलट-पलटकर देखा। फिर कहा, ''नहीं तो, इस नाम पर तो एक पाई भी जमा नहीं है।''

अंधी वहीं जमी बैठी रही। उसने रो-रोकर कहा, ''सेठ जी! परमात्मा के नाम पर, धर्म के नाम पर, कुछ दे दीजिए। मेरा बच्चा जी जाएगा। मैं जीवन-भर आपके गुण गाऊँगी।''

परंतु पत्थर में जोंक न लगी। सेठ जी ने क्रुद्ध होकर उत्तर दिया, ''जाती है या नौकर को बुलाऊँ।'' अंधी लाठी टेककर खड़ी हो गई और सेठ जी की ओर मुख करके कहा, ''अच्छा, भगवान तुम्हें बहुत दे।'' और अपनी झोंपड़ी की ओर चल दी।

यह आशीष न था बल्कि एक दुखी का शाप था। बच्चे की दशा बिगड़ती गई। एक दिन उसकी अवस्था बड़ी चिंताजनक हो गई, प्राणों के लाले पड़ गए। अंधी को सेठ जी पर रह-रहकर क्रोध आता था। उसे सेठ जी से घृणा हो गई।

अचानक बैठे-बैठे उसको कुछ ध्यान आया। उसने बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया और ठोकरें खाती, गिरती-पड़ती, सेठ जी के द्वार पर पहुँचकर धरना देकर बैठ गई।

एक नौकर किसी काम से बाहर आया। अंधी को बैठा देखकर उसने सेठ जी को सूचना दी, सेठ जी ने आज्ञा

दी कि उसे भगा दो। नौकर ने अंधी से चले जाने को कहा, किंतु वह उस स्थान से न हिली। मारने का भय दिखाया, पर वह टस-से-मस न हुई। उसने फिर अंदर जाकर कहा कि वह नहीं टलती।

अंतत: सेठ जी स्वयं बाहर पधारे। देखते ही पहचान गए। बच्चे को देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ कि उसकी शक्ल-सूरत उनके मोहन से बहुत मिलती-जुलती है। सात वर्ष हुए, तब मोहन किसी मेले में खो गया था। उसकी बहुत खोज की, पर उसका कोई पता न मिला। उन्हें स्मरण हो आया कि मोहन की जाँघ पर एक लाल रंग का चिह्न था। इस विचार के आते ही उन्होंने बच्चे की जाँघ देखी। चिह्न अवश्य था, परंतु पहले से कुछ बड़ा। उनको विश्वास हो गया कि बच्चा उन्हीं का है। उन्होंने तुरंत उसको छीनकर अपने कलेजे से चिपटा लिया। बच्चे का शरीर ज्वर से तप रहा था। उन्होंने नौकर को डॉक्टर लाने के लिए भेजा और स्वयं मकान के अंदर चल दिए।

अंधी चिल्लाने लगी, "मेरे बच्चे को न ले जाओ, मेरे रुपये तो हजम कर गए अब क्या मेरा बच्चा भी मुझसे छीनोगे?"

सेठ जी बहुत चिंतित हुए और कहा, "यह बच्चा मेरा है। सात वर्ष पूर्व कहीं खो गया था, अब मिला है, सो इसे कहीं नहीं जाने दूँगा और लाख यत्न करके भी इसके प्राण बचाऊँगा।"

अंधी ने एक जोर का ठहाका लगाया, "तुम्हारा बच्चा है, इसलिए लाख यत्न करके भी उसे बचाओगे। मेरा बच्चा होता, तो उसे मर जाने देते, क्यों? यह भी कोई न्याय है? इतने दिनों तक खून-पसीना एक करके उसको पाला है। मैं उसको अपने हाथ से नहीं जाने दूँगी।"

सेठ जी की अजीब दशा थी। कुछ करते-धरते बन नहीं पड़ता था। कुछ देर वहीं मौन खड़े रहे फिर मकान के अंदर चले गए। अंधी कुछ समय तक खड़ी रोती रही फिर वह भी अपनी झोंपड़ी की ओर चल दी।

दूसरे दिन प्रात:काल प्रभु की कृपा हुई या दवा ने जादू का-सा प्रभाव दिखाया। मोहन का ज्वर उतर गया। होश आने पर उसने आँख खोली, तो सर्वप्रथम शब्द उसके मुँह से निकला, "माँ।"

चारों ओर अपरिचित शक्लें देखकर उसने अपने नेत्र फिर बंद कर लिए। उस समय से उसका ज्वर फिर अधिक होना आरंभ हो गया। 'माँ-माँ' की रट लगी हुई थी, डॉक्टरों ने जवाब दे दिया, सेठ जी के हाथ-पाँव फूल गए, चारों ओर अँधेरा दिखाई पड़ने लगा।

"क्या करूँ, एक ही बच्चा है, इतने दिनों बाद मिला भी तो मृत्यु उसको अपने चंगुल में दबा रही है। इसे कैसे बचाऊँ?"

सहसा उनको अंधी का ध्यान आया। पत्नी को बाहर भेजा कि देखो कहीं वह अब तक द्वार पर न बैठी हो। परंतु वह वहाँ कहाँ? सेठ जी ने फिटन तैयार कराई और बस्ती से बाहर उसकी झोंपड़ी पर पहुँचे। अंदर गए तो देखा कि अंधी एक फटे-पुराने टाट पर पड़ी है और उसके नेत्रों से अश्रुधारा बह रही है। सेठ जी ने धीरे-से उसको हिलाया। उसका शरीर भी अग्नि की भाँति तप रहा था।

सेठ जी ने कहा, "तेरा बच्चा मर रहा है। डॉक्टर निराश हो गए हैं। वह रह-रहकर तुझे पुकारता है। अब तू ही उसके प्राण बचा सकती है। चल और मेरे...नहीं-नहीं अपने बच्चे की जान बचा ले।"

अंधी ने उत्तर दिया, "मरता है तो मरने दो, मैं भी मर रही हूँ।"

सेठ जी रो दिए। आज तक उन्होंने किसी के सामने सिर न झुकाया था। किंतु इस समय अंधी के पाँवों पर गिर पड़े और रो-रोकर कहा, "ममता की लाज रख लो, आखिर तुम भी उसकी माँ हो। चलो, तुम्हारे जाने से वह बच जाएगा।"

'ममता' शब्द ने अंधी को विकल कर दिया। उसने तुरंत कहा, "अच्छा चलो।"

सेठ जी सहारा देकर उसे बाहर लाए और फिटन पर बिठा दिया। फिटन घर की ओर दौड़ने लगी। उस समय सेठ जी और अंधी भिखारिन दोनों की एक ही दशा थी। दोनों की यही इच्छा थी कि शीघ्र-से-शीघ्र अपने बच्चे के पास पहुँच जाएँ।

कोठी आ गई, सेठ जी ने सहारा देकर अंधी को उतारा और अंदर ले गए। भीतर जाकर अंधी ने मोहन के माथे पर हाथ फेरा। मोहन पहचान गया कि यह उसकी माँ का हाथ है। उसने तुरंत नेत्र खोल दिए और उसे अपने समीप खड़े हुए देखकर कहा, "माँ, तुम आ गईं।" अंधी भिखारिन मोहन के सिरहाने बैठ गई और उसने मोहन का सिर अपनी गोद में रख लिया। उसको बहुत सुख अनुभव हुआ और वह उसकी गोद में तुरंत सो गया।

दूसरे दिन से मोहन की दशा अच्छी होने लगी और दस-पंद्रह दिन में वह बिलकुल स्वस्थ हो गया। जो

काम हकीम, वैदय और डॉक्टर न कर सके वह अंधी की स्नेहमयी सेवा ने कर दिया।

मोहन के पूरी तरह स्वस्थ हो जाने पर अंधी ने विदा माँगी। सेठ जी ने बहुत रोका परंतु वह न मानी। जब वह चलने लगी, तो सेठ जी ने रुपयों की एक थैली उसके हाथ में दे दी। अंधी ने पूछा, "इसमें क्या है?"

सेठ जी ने कहा, "इसमें तुम्हारी धरोहर है, तुम्हारे रुपये। मेरा वह अपराध..."

अंधी ने बात काटकर कहा, "यह रुपये तो मैंने तुम्हारे मोहन के लिए इकट्ठे किए थे, उसी को दे देना।"

अंधी ने थैली वहीं छोड़ दी और लाठी टेकती हुई चल दी। बाहर निकलकर उसने उस घर की ओर देखा। उसके नेत्रों से अश्रु बह रहे थे, किंतु आज वह एक भिखारिन होते हुए भी सेठ से महान थी। इस समय सेठ याचक था और वह दाता थी।

—रवींद्रनाथ ठाकुर

(इस कहानी का मूल शीर्षक 'भिखारिन' है।)

माइंड मैप

असली याचक

मुख्य पात्र

- अंधी भिखारिन
- भिखारिन का दस वर्षीय बालक
- धनी सेठ

घटनाक्रम

- अंधी का भीख माँग-माँगकर कुछ पैसे इकट्ठा करना
- सेठ जी के पास जमा करना
- तेज़ ज्वर के कारण बेटे की तबीयत बिगड़ना
- अंधी का सेठ के पास कुछ रुपये माँगने जाना और सेठ का मुकर जाना
- अंधी का सेठ के द्वार पर धरना देना और सेठ का अपने खोए बेटे को पहचानना
- बेटे का घर ले जाकर इलाज कराना
- बेटे का माँ को याद करना
- सेठ को अंधी को लाना और माँ को देखकर बेटे की तबीयत में सुधार होना

अंधी भिखारिन कैसी है ?

- गरीब लेकिन नेक दिल
- दयालु
- ममतामयी

याचक कौन है और दाता कौन ?

- याचक सेठ है और दाता अंधी भिखारिन क्योंकि गरीब होते हुए भी उसने सेठ को अपनी ज़िंदगी भर की पूँजी दे दी। उसके बेटे को जीवन दिया। जबकि सेठ सर्व साधन संपन्न होते हुए भी उसे कुछ न दे सका।

सेठ कैसा है ?

- देशभक्त धर्मात्मा होने का दिखावा करनेवाला
- गरीबों का शोषण करनेवाला
- अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवाला

© Madhubun Educational Books

व्याकरण संबोध

1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए—

हाथ	—	.....	घर	—	.....
रास्ता	—	.....	शरीर	—	.....
सुबह	—	.....	अँधेरा	—	.....
नौकर	—	.....	दिन	—	.....

2. वाक्य में रंगीन छपे पदों के विपरीत शब्दों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—

क. राहगीरों में अधिक संख्या तो श्वेत वस्त्रवालों की होती है, ... की नहीं।

ख. तब भी अंधी को निराशा न होती क्योंकि उसका दीप झोंपड़ी में ..... से उसका इंतज़ार कर रहा होता।

ग. उसको वह अच्छा खिलाती और पहनाती, ... तो उसने एक शब्द भी कभी नहीं बोला था।

घ. अंधी की धर्म में विशेष रुचि थी ..... से वह बहुत डरती थी।

ङ. यह आशीष न था बल्कि एक दुखी का ..... था।

च. उसने अपने पुत्र में गुण ही देखे थे ..... नहीं।

छ. इस समय सेठ याचक था और वह ..... थी।

3. उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं, जो सार्थक शब्दों के पहले लगते हैं और उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं; जैसे—**अ**नाथ, **स**पूत, **ना**समझ।

निम्नलिखित वाक्यों में से उपसर्गयुक्त शब्दों को छाँटकर लिखिए—

क. काशी में सेठ बनारसीदास सुप्रसिद्ध व्यक्ति हैं। .....

ख. उसने अपरिचित शक्लें देखकर अपनी आँखें बंद कर लीं। .....

ग. सच्ची मानवता अविश्वास और अनास्था से नहीं मिलती है। .....

घ. सत्य का स्वरूप प्रगतिशील होता है। .....

ङ. अंधी ने अपने जीवन में कभी भी निर्धनता को अभिशाप नहीं समझा था। .....

च. वह जानती थी कि मंदिर में आनेवाले सहृदय हुआ करते हैं। .....

© Madhuban Educational Books

उत्तर

Q1: दो- दो पर्यायवाची

1. हस्त, कर
2. गृह, आलय
3. मार्ग, पथ
4. तन, काया
5. सवेरा, प्रातः
6. अंधकार, तम
7. अनुचर, सेवक
8. दिवस, वासर

Q2: विपरीत शब्दों से रिक्त स्थान भरो:

1. अश्वेत
2. आशा
3. बुरा
4. अधर्म
5. शाप
6. अवगुण
7. दाता

Q3: उपसर्गयुक्त शब्दों को छाँट कर लिखो:

1. सुप्रसिद्ध
2. अपरिचित
3. अविश्वास, अनास्था
4. स्वरुप, प्रगतिशील
5. निर्धनता, अभिशाप
6. सहृदय